Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6),2271–2274

SOCIAL CONCERNS DEPICTED IN THE NOVEL "SUNFLOWERS OF DARKNESS" BY KRISHNA SOBTI

कृष्णा सोबती कृत'' सूरजमुखी अँधेरे के'' उपन्यास में चित्रित सामाजजक समस्याएं

khuraizam Uma Devi [1]

[1] Assistant Professor Mehndi Department G.P. Women's College, Imphal Dhanmanjuri, University Mannpur, India

ABSTRACT

English: The novel "Sunflowers of Darkness" written by the famous writer Krishna Sobtiji highlights the social concerns. This novel is presented on the problem of 'Ratti' based on rape in childhood. In this novel, the writer has also portrayed the mental state of the rape victim 'Ratti' very well, which is not original even if the memory wants to. She keeps getting humiliated in front of her friends by doubling up again and again in the photoshoot event. In this situation, 'Ratti' is filled with the eagerness to take revenge from each one. We cannot remember that incident in any form. As a result of that incident, she always has the thought of taking revenge from the male race in her mind. So she invites many men to take a change and tries to maintain relations with them but due to no warmth in her body many men cheat her. Due to Ratti's body being cold or frigid she is named 'Frigidity'. Finally Diwakar gets the right to propose marriage to Ratti. Ratti is a reclusive woman in the Sanatani scriptures. But inside she is much stronger, fearless and brave. Ratti has nothing but bitter memories. The article says that the actor Ratti is not a prostitute, but she has an idea of taking revenge from the male race for an incident in her childhood. The same problem is presented in this novel.

Hindi: प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबतीजी द्वारा रचित उपन्यास “सूरजमुखी अँधेरे के” की सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने पर पता चलता है । बचपन में बलात्कार की गई ‘रत्ती’ की समस्या को लेकर यह उपन्यास प्रस्तुत किया गया है । इस उपन्यास में लेखिका ने बलात्कारित ‘रत्ती’ की मानसिक स्थिति को भी बहुत अच्छी तरह चित्रित किया गया है जो कटु स्मृति को चाहकर भी भूल नहीं पाती है । बीती घटना को बार-बार दोहराकर उसके दोस्त और सहेलियाँ उसे जलील करती रहती है । इस स्थिति में ‘रत्ती’ एक-एक से बदला लेने की उत्तेजना से भर जाती है । उस घटना को हमेशा किसी न किसी रूप में स्मरण होती रही । उस घटना के परिणाम स्वरुप उसके मन में हमेशा पुरूष जाति से बदला लेने का विचार रहता है । इसलिए वह बदला लेने के लिए कई पुरूषों को आमंत्रित करती है और उनके साथ संबंध रखन े की कोशिश करती है पर उनक े शरीर में कोई गरमाहट न होने क े कारण कई पुरूष उन्हें छा ेड़ देता है । ‘रत्ती’ का शरीर ठण्ड या श ून्य होने के कारण उनह ें ‘फ्रिजिडिटी’ का नाम देकर चला जाता है। अंत में दिवाकर, रत्ती को विवाह-प्रस्ताव रखता है परन्त ु ‘रत्ती’, दिवाकर का विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है क्योंकि उसकी दृष्टि में विवाह स्त्री-पुरुष के यौन-संबंधो ं को वैधता का एक प्रमाणपत्र मात्र नहीं । ‘रत्ती’ अपने में सिकुड़ी ग्रंथियो ं में सिमटी एकांतप्रिय नारी है । लेकिन भीतर - ही - भीतर उससे कहीं अधिक मजबूत, निडर और बहादुर है । ‘रत्ती’ के पास तल्ख यादों के सिवा कुछ नहीं । लेखिका का कथन है कि नायिका रत्ती वेश्या तो नहीं है लेकिन बचपन में घटित घटनाआ ें का े ल ेकर पुरुष-जाति से बदला ल ेने का विचार है । यही समस्या इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है ।

Keywords: Rape, Frigidity, Memory, Mental, Change, Marriage Etc, ज्ञमलूवतकरू बलात्कार, ाटना, स्मृति, मानसिक, बदला, फ्रिजिडिटी, विवाहदृप्रस्ताव इत्यादि

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5460

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है, जहाँ आहदकाल में स्ि्ी-पुरूषों की इच्छानुसार जीि्नयापन करती आयी है।

How to cite this article (APA): Devi, K.U. (2024). Social Concerns Depicted in the Novel "Sunflowers of Darkness" by Krishna Sobti. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5*(6), 2271–2274. doi: 10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5460

कृष्णा सोबती कृत'' सूरजमुखी अँधेरे के'' उपन्यास में चित्रित सामाजजक समस्याएं ।

आधुननक युग के आरम्भ होने के साथ जहाँ युग बदला िहीं मूल्य भी बदल।े े स्ि ी अजस्मता मंे े भी नये विमषष का समायोजन हुआ। कई पुरूष कथाकारों ने स्ि ी को दख्े े े ाने और परखने तथा उनकी समस्याओं से जूझने की कोवषषें की है लेककन कई बार इस कोवषष में स्ि ी-परम्परागत छवि ललए महहमामय बनकर उभरी या कफर संस्थागत मूल्यों में दबती-वपसती कारणणक छवि के ललए पुरूषों से सुरक्षा की भीख माँगती है बेि ारी सी। आधुननक समकालीन स्ि ी कथाकारों में व्यजतत के स्तर पर अजस्मता की प्रनतष्ठा ओर उसकी अजस्मता सम्बंधी प्रष्नों को मुखरता से उठाया है। इन्होंने माना है कक व्यजतत सत्य ही समजष्ि सत्य है। 'पसनषल इस पोललहिकल' सामाजजक सन्दभष बनकर सामने

आता है। इनके उपन्यासों में चित्रित जस्ि याँ भारत की सामान्य स्ि ी से त्रबलकुल लभन्न हैं, जो आसँ ू विगललत या मार सहकर भी अंदर ही अंदर घुि ने ि ाली होती हैं। ये जस्ि याँ उन्मुतत विि ारों ि ाली तो हैं ही, अपने जीि न को प्रनतननचधत्ि करने का साहस भी पूरे उठान के साथ इनमें है। इसके सम्पूणष कथा-साहहत्य में स्ि ी की समाजजक, आचथषक, सांस्कृनतक और मानलसक संबंधी विलभन्न समस्याएँ प्रष्निाि क मुद्राओं में सामाने आयी हैं। इन सबके बीि इनकी

अजस्मता के ननमाषण और अजस्मता की खोज को प्रकिया भी ि लती रहती है। इनके प्रायः सभी उपन्यास भारतीय समाज में स्ि ी की दषा, जस्थनत और गनत में संबंचधत समस्याओं को तो उभरते ही है, साथ ही रिनाकार के विवषष्ि व्यजततत्ि और अनूठे कथावषल्प या कलावषल्प से साक्षात्कार कराते हैं।

साहहत्य और समाज में धननष्ठ सम्बन्ध है। साहहत्य का आधार समाज है। साहहत्य में युग विषेष कला, वषल्प भी अपनाया जाता है। आधुननक युग में व्यजतत और समाज नयी हदषा की खोज में व्यस्त है। इससे मानि जीि न के नये

मूल्यों और नीन आयामों के प्रनत जहिल होता जा रहा है। इससे साहहत्यकार भी सजग होकर समाज का यथाथष चिि ण करने का प्रयास करता है।

साहहत्य और समाज के सम्बन्ध को स्पष्ि करते हुए गुलाबराय का कथन है कक ''साहहत्य हमारे समाज का प्रनतत्रबम्ब ही नहीं, ि ह उसका ननयमात्मक और उन्नायक भी है। ि ह मानि संबंधों को दृढ़ बनाता है। समाज को संगहठत करता है, जातीय जीि न का बाधक है। यह हमें संस्कृनत और जातीय एकता में बद्ध करता है।''

अतः आधुननक साहहत्यकार का यह दानयत्ि हो जाता है कक ि ह आज के बदलते हुए समाज एिं मनुष्य के जीि न से

सम्बजन्ध समस्याओं का यथाथष चिि ण करना अनतआिष्यक/अनत महत्ि पूणष हैं

कृष्णा सोबती जी के उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के' की मुख्य समस्या उपन्यास की नानयका स्ि ी के जीि न की है जो बाल्याि स्था में बालात्कार जैसे कुकमष की वषकार हो जाने पर गन्दगी के दल-दल मंे े

फँसती अंदर और बाहरी की दुष्मनी में जकड़ी मानिीय मन की ननतांत उलझी हुई ि ाहत और जीि न भरे संघषषमय कहानी की समस्या है। इस उपन्यास में नानयका स्ि ी के ललए बालात्कार एक घिना थी जजसकी ि ीस को ि तत की मलहम और सहानुभूनत'' के फाहे भुला देत।े े इस घिना को हादसा बनाकर उछाला समाज ने। बाललका स्ि ी के समियस्क साथी हिाघर में स्ि ी के साथ घिी घिना का जजि करते है - ''तुम अच्छी लड़की नहीं हो।'' परम्परागत

मूल्यों के आधार पर अच्छे-बुरे का ननधाषरण करने। बच्ि ों का खेल नहीं । फलतः डिम्पी, वपंतकू, अज्जू, तारा, तोषी, त्रिलोकी, पाषी दोषी नहीं है। दोषी है तो उनकी मानलसकता को विि नत का पहला पाठ पढ़ाने ि ाला बाललंग सभ्य समाज जो उद्दण्ि ि ूर वषकारी को सबक लसखाने के बजाय वषकार को उपहार का पाि बना अपनी हृदयहीनता में णखलसयानी

क्षेप नछपाने का प्रयास करता है।

स्ि ी के पास विरोचधयों से जूझने के ललए एक हचथयार है -'आिामकता'। 'मैं जब मारने पर आती हूँ तो बहुत जोर से मारती हूं। स्ि ी अपने हचथयार की ताकत जानती है और इस हचथयार का भरपूर प्रयोग करती है। वपंतकू, अज्जू, श्यामली और कफर पाषो, रत्ती इन्हें पीि ती नहीं, मानो हिाघर में हुए उस अमानिीय कृत्य की भयाि हता को खुरि-खुरि

कर लमिा ि ालना ि ाहती है। देह की पविि ता को गँि ा बैठने का गम उसमें अपने अजस्तत्ि को बिा सकने का अपरररलमत सामर्थयष भर गया है।

लेककन जीि न माि प्रनतकियाओं का जमघि नहीं। न ही दूसरांे े की आँख से ननरन्तर अपने को देखते रहना भर है। स्ि ी जजस समाज में जी रही है, उसकी विष्ि सनीयता पर अनायास एक बड़ा सा प्रष्नचिन्ह लग जाता है।

तब शंका उठती है कक उपन्यास में ऐसे समाज की सजषना स्ियमेि हो गई है या आयासपूि षक की गई है।

स्ि ी को जजस समाज ने उस ननरपराध उपहार स्ि रूप बंदरंग नघनौना भविष्य हदया है, उस समाज की प्रभुसत्ता स्िीकारने को स्ि ी बाध्य नहीं।

इसललए जड़ सामाजजक कायदे कानूनों के फ्रेम मंे े उसे कफि नहीं ककया जा सकता। यह रत्ती का प्रनतरोध नहीं, प्रनतहहंसा

भी नहीं, िरन् उसकी सतत् चिन्तन प्रकिया का पररणाम है। पाप ओर नैनतकत के प्रष्नों का ननबिारा करने का बोध, पँूजी रूप में उसे लमला है। समाज या पुरूष के प्रनत कुिता अथिा शिुता का भाि स्िी में कभी नहीं उपजा। िास्ति में

इस और विचार करने का अिकाष ही नहीं। अपनी अपूणषता को लेकर िह इतनी चिजन्तत है कक सदैि स्ियं को िस्त करती रहती है या उस िस्त से उबरने का प्रयास भी करते है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कक लेणखका अपने नारी पािों को पूरी सहानुभूनत देने के बािजूद पुरूष पािों पर या

रूढ़ सामाजजक मूल्यों और मान्यताओं पर दोष नहीं करती। अपने समस्त पािों के प्रनत उनका यह सकारात्मक दृजष्िकोण असत् एिं अपराधी को अचधक तीव्रता से रेखांककत करता है। स्िी के व्यजततत्ि की आन्तररक बुनािि में भारतीय संस्कार मौजूद है। उसकी मल्ेू य िेतना विषुद्ध रूप से भारतीय है। स्िी ने पुरूषों से बदला, लेने के ललए,

कई पुरूषों से सम्बन्ध रखां िे है - असद, जगतधर, रोहहत, बासली, राजन, जो भी, सुमेर, िेवि, भीमानुराि,

सुब्रमननयम और श्रीपत आहद पुरूष उनके जीिन में आते हैं लेककन रत्ती का दुभाषग्य है कक पुरूश लमिों की लम्बी कतार मैिी सम्बन्ध को अंतरंगता का जामा पहनाते-पहनाते आत्मललप्त होने लगती है। राजन ि रोहहत पनत की अचधकार भरी संकुचित मानलसकता में स्िी की स्ितंिता बंचधत करना िाहते हैं तो जगनाथ स्िी को नहीं, स्िी के जररए

कारोबार के ललए पुि पाना िाहता है। और स्िी, आत्मोपलजधध के उस मुकाम तक पहुंिने के ललए हम सफल रूप में

विषुद्ध पुरूष पाना िाहती है। इस दृजष्ि से रत्ती 'भोग्या' या 'िस्तु' पाि बन जाने की ननयनत को दृढ़तापूिषक अस्िीकारती हुई संिेदनषील आधुननक नारी का प्रनतननचधत्ि करती है।

छविकर में अन्य पुरूष से हिकर ननभीक हिप्पणणयां करने का साहस है। िह इस कारण हदिाकर से कहीं भीत भी है - ''एक हदन केषी की आँखों को अपनी तहें िोलते देखा तो ऐसी छिपिाई कक रो दी थी। अब लगता है तुमने भी मेरी सीध कैमरे 'अपरिर' खोल ललया है और लगातार मुझे खींिते िले जा रहे हो।'' हदिाकर पुरूष नहीं, मलहम है जजसने

स्िी के उत्ताप को हर कर उसके िीसते घाि को भर कर उसे स्िस्थ बनाया है। हदिाकर व्यजतत नहीं, अनुभि है।

जजससे गुजर कर रसभेद के लसकताकणों में खो गई, जीिन लहर को रत्ती ढूँढ पाई है। हदिाकर जररया नहीं, एक मूल्य है जो स्िी जैसे ककसी भी संिेदनषील प्राणी को विकास की ऊिाईयांे की और प्रेरित करता है।- ''षून्यों की एक लम्बी कतार में तुमने एक अंक जोड़ हदया है। जो कुछ भी नहीं था, िह अब बहुत बड़ी रावष है।'' स्िी जानती है ''िह काला जहरीला क्षण'' उसकी देह की आत्मस्तीत्ि को लील गया है, लेककन मन में अंगड़ाइयाँ होती

स्िप्नविजष्ि औरत आज भी उसमें जजंदा है। सुरंगों के दुगषम अंचधयारे में भिकती रत्ती, ननस्तधध अथाह जलरावष के

'बीिोंबीि संकरे पुल से गुजरती तनािग्रस्थ स्िी के पास स्िप्न देखने का समय नहीं। लेककन अब िह इस छोर से उस छोर तक फेले हुए आसमान की छाया मंे सरु क्षक्षत है। तनािमुतत भी। खुरदरी जतमीन पर पीठ हिका आकाष की ओर ननहारते हुए सपने बुनने की मीठी छुि है उसे सहासा रत्ती हो आई। शोरिी से हदिाकर को आंखों से देखकर कहा -

हम दोनों लमलकर तया एक छोिा सा गाछ नहीं उगा रनतका, यहाँ तो सब पथरीली िट्िाने हैं। कहाँ जायेगा अंकुर। ऐ स्िी ने िृक्ष तले पौंली तयाली पर हाथ कफराया लाड़ से इतना नहीं जानते। मैं जो हूं धरती। यहां उगेगा िह गाछ हदिाकर ।

रत्ती णखलणखलाकर हंसने लगी कक भँिराले अँधेरे में सूरजमुखी की बरखा लगी।'' 'सूरजमुखी अँधेरे के '' स्िी के एबनामषल से नामषल हो जाने की कथा हैं, गहराई से देखे तो पाएँगे इस थीम के प्रनतमान समाज को ककतनी दूर तक प्रभावित करते है अथिा स्ियं समाज से कहां तक प्रभावित होतंे है।ें

कृष्णा जी इस दृजष्ि से, अचधक व्यािहाररक एिं संतुललत हैं। पािों के व्यजततगत नैनतक बोध का समथषन करते हुए भी

िे अन्ततः व्यजतत ि समाज के अन्यों न्याचश्रत सम्बन्धों को स्िीकार करती हैं। ईकाई रूप में इस दृजष्ि रूप में व्यजतत का महत्त्ि ननविषिाद है। लेककन समाज से हीन उसका अजस्तत्ि नहीं। समाज की लघुतम ईकाई है पररिार और पररिार व्यजतत के विस्तार का पररणाम है। विविध संबंधों में बंि कर व्यजतत बंधता नहीं, मुतत होता है - घोर अंह के संकीणष पाष से। इस सत्य की स्िीकृनत लेणखका को पूिषिती व्यजततिादी उपन्यासकारों से अलगाती है। अपने नैनतक बोध के साथ समाज के प्रनत समपषण का भाि स्िी, हदिाकर के वििाह प्रस्ताि को ठुकरा दते ेी है तयोंकक उसकी दृजष्ि मंे वििाह, स्िी पुरूष के यौन-संबंधों की िैधता का एक प्रमाण पि माि नहीं। वििाह है ढेरों, ढेर कत्तषव्यों-दानयत्िों के समयक पालन का गुरू-गम्भीर दानयत्ि वििाह है, जीिनपयषनत एकननष्ठ भाि से ननभाया जाने िाला अिूि सम्बन्ध को अपनी कामना की आंि में राख कर देने का अथष होगा- 'वििाह संस्था' की शुचिंता को नष्ि कर देना है। रत्ती ऐसा अषोभन कायष नहीं कर

सकती। संकीणषता एिं रूहढ़यों के पास से मुतत मानिीय मूल्यों के प्रनत उसकी आस्था अगाथ कृष्णा सोबती कृत'' सूरजमुखी अँधेरे के'' उपन्यास में चित्रित सामाजजक समस्याएं है।

आधुननक युग कथा-साहहत्य का युग है। अतः आधुननक युग की अनेक समस्याओं मंेे उलझे व्यजतत और समाज की अिस्था का चचिण समकालीन उपन्यासों में चित्रित हुआ है। आज मानि समस्याओं से नघरा है। औघोगीकरण के इस युग में व्यजतत परम्परागत समाज के प्रनतबन्धों को तोड़कर स्ितंि होकर जीना िाहता है। आज भी नारी, वषक्षक्षत नारी

तथा नौकरी पेषेिाली के रूप मंेे सामने लाती है। आज लोगांेे के समक्ष आचथषक विषमता, बेकारी, शोषण, दमन,

भ्रष्टािार इत्याहद बहुमुखी विकि समस्याएं है।

आधुननकता और हहन्दी संस्थान में इंद्र महान हहन्दी के सामाजजक उपन्यास मंेे नारी, िॉ. रेखा कुलकणी।

हहन्दी उपन्यास का इनतहास, गोपाल राय साहहत्य का सामाजषास्ि, िॉ. विष्िम्भर दयाल गुप्त सूरजमुखी अंधेरे के िॉ. कृष्णा सोबती हहन्दी उपन्यासः सामाजजक संदभष, अलभलाषा, हदल्ल